|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 10. August | | | |
| **Fest des heiligen Laurentius, Diakon, Märtyrer** | | | |
| Lesung: 2 Kor 9,6-10; Evangelium: Joh 12,24-26 | | | |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 786, 1-3 | | Zieh an die Macht |
|  | GL 481, 1+4+5 | | Sonne der Gerechtigkeit |
|  | GL 548, 1-3 | | Für alle Heil’gen |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 163, 7 | | Herr Jesus |
|  |  | |  |
| Gloria: | GL 714 | | Ehre, dir Gott |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 112, 1-2.5-9 | |  |
|  | Kehrvers: | |  |
|  | GL 61, 1 | | Selig der Mensch |
|  | oder | |  |
|  | GL 543, 1+2 | | Wohl denen, die da wandeln |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 6 |  | |
|  | Vers: |  | |
|  | *So spricht der Herr:* | | |
|  | *Wer mir nachfolgt, wandelt nicht in der Finsternis,* | | |
|  | *sondern hat das Licht des Lebens.* | | |
|  |  |  | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 460, 1+2+4+5 | Wer leben will | |
|  | GL 210 | Das Weizenkorn muss sterben | |
|  | GL 187 | Wir weihn‘ der Erde Gaben | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 198 | Heilig | |
|  |  |  | |
| Agnus Dei: | GL 497, 1+5 | Gottheit tief verborgen | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 458, 1-4 | Selig seid ihr | |
|  |  |  | |
| Schluss: | GL 773, 1+4 | Dich König, loben wir | |
|  | GL 542, 1+4 | Ihr Freunde Gottes | |